

दैनिक

भारत सरकार द्वारा विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त

(R)

मुंबई हलचल

अब हर सच होगा उजागर

ट्रंप आया माहामारी लाया

भारत पर भारी पड़ा...

गंभीर बात यह है कि ट्रंप के साथ भारत आई भारी भरकम टीम का कोई मेडिकल टेस्ट दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एअरपोर्ट पर नहीं किया गया

संवाददाता

मुंबई। कोरोना वाइरस का कहर पूरे विश्व में सिर चढ़ कर बोल रहा है। इस वायरस की चीन के वुहान शहर से उत्पत्ति बताई जा रही है। जनवरी माह तक यह वायरस अमेरिका तक पहुंच गया था और लोगों को अपनी जद में लेने लगा था। इस दौरान मार्च माह में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारी भरकम टीम के साथ भारत का दौरा किया। (शेष पृष्ठ 3 पर)

ये था मेन कोरोना वायरस: जब सबको पता था कि पूरी दुनिया में कोरोना फैल चुका है फिर भी भारत की सरकार ने इसको नजरअंदाज किया, इसलिए क्योंकि ट्रंप आने वाला था और पूरी जनता को गुमराह करके रखा गया, ट्रंप से मीटिंग होने और भारत से वापस अमेरिका जाने के बाद भारत में लॉकडाउन का ऐलान किया गया, अगर समय रहते भारत में पहले ही लॉकडाउन कर दिया जाता तो आज हमारे देश में कोरोना का कहर नहीं मचा होता, मगर सच्चाई तो यह है कि अमेरिका से ट्रंप आया साथ में कोरोना जैसी माहामारी लेकर आया। इस पर किसी का ध्यान नहीं जा रहा है।



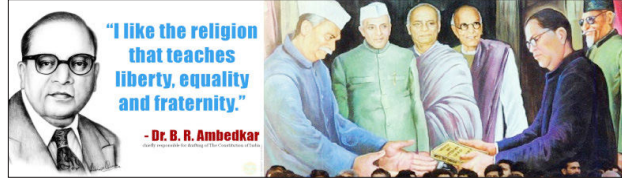
संपादकीय

बदलता विज्ञान

आज अगर यह कहा जाए कि दुनिया में विज्ञान पर सर्वाधिक चुनौतियां मंडरा रही हैं, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। मनुष्य की व्यापक सुरक्षा और संरक्षण की जिम्मेदारी विज्ञान पर ही है। ऐसे वैज्ञानिक चाहिए, जो हमें असमय बारिश, आंधी, भूकंप व अन्य जलजलों से बचा सकें, जो हमें महामारियों से बचा सकें। भारत की चर्चा करें, तो अनेक इलाकों में खेतों में खड़ी फसल पर बारिश की जो मार पड़ी है, क्या विज्ञान के अलावा किसी के पास इसका उपचार था? क्या मौसम के बिगड़ते मिजाज को समझने में हम नाकाम होने लगे हैं? कहीं न कहीं हम अपनी बुनियादी समस्याओं को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। क्या हमारे वैज्ञानिकों का ध्यान उपभोक्तावादी वस्तुओं और सेवाओं के निर्माण में ज्यादा है और मूलभूत आपदाओं का उपचार खोजने पर कम ध्यान दिया जा रहा है? भारत की बात करें, तो महामारी के बीच बिगड़ते मौसम की चुनौती भी एक मौका है, जब विज्ञान की प्राथमिकताओं पर विचार करना होगा। यह बहस अमेरिका में भी चल रही है कि विज्ञान की प्राथमिकताओं को आखिर कौन तय करता है? इसमें कोई शक नहीं कि विज्ञान की प्राथमिकताएं समकालीन सत्ता या राजनीति ही तय करने लगी हैं। एक समय था, जब केवल लोगों की जरूरत के हिसाब से विज्ञान चलता था, लेकिन अब राजनीति के हाथ में बागडोर है। वर्तमान महाशक्ति अमेरिका का विज्ञान हो या महाशक्ति होने को आतुर चीन का विज्ञान, दोनों की ही दिशा वहां की राजनीति तय कर रही है। विशेषज्ञ परेशान हैं कि राजनीति की प्राथमिकताएं बाजार तय करने लगा है। दुनिया की जरूरतों को पूरा करने के लिए विज्ञान और राजनीति के बीच समन्वय पर सर्वाधिक चर्चा अमेरिका में ही हो रही है। अनुसंधानों को साझा करने, विज्ञान को अधिक खुला बनाने, अधिक कुशल और सहयोगी बनाने पर विचार तेज हुआ है, तो इसका सभी को स्वागत करना चाहिए। इसके लिए दुनिया में राजनीति और वैज्ञानिक चिंतन का तरीका बदलना पड़ेगा। इसमें शक नहीं कि दुनिया को विज्ञान के देश अमेरिका से ही सर्वाधिक उम्मीदें हैं, लेकिन वह जिस तरह से कोरोना के जाल में फंसा है, उससे दुनिया की चिंता बढ़ी है। कोरोना अनुसंधान की ही अगर चर्चा करें, तो चीन ने जिस तरह से सूचनाओं की जमाखोरी की है, उससे सर्वाधिक विचलित अमेरिका और उसके वैज्ञानिक हैं। वैज्ञानिकों की दुनिया में एक चिंता यह भी है कि कोरोना के दौर में कहीं सूचनाओं को छिपाने की अमानवीय परंपरा की बुनियाद मजबूत न हो जाए। कोरोना की सर्वाधिक मार झेल रहा अमेरिका जो कीमत चुका रहा है, संभव है कि उसका राजनीतिक नेतृत्व और ज्यादा स्वार्थी या राष्ट्रवादी होकर उभरे। दुनिया के वैज्ञानिक सर्वाधिक चिंतित हैं। आश्चर्य नहीं, रिसर्चगेट जैसे पेशेवर नेटवर्क उभर आए हैं, जो दुनिया में खुले अनुसंधान की वकालत कर रहे हैं।

इतिहास डॉ भीमराव अंबेडकर के बिना अधूरा है

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के अम्बवाड़े गांव में १४ अप्रैल १८९१ में महार जाति में हुआ था। डॉ अंबेडकर के पिता श्री रामजी राव सतपाल सेना में सूबेदार के पद पर थे। वे अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति के थे। अपने बच्चों के साथ बैठकर पूजापाठ करना उनका नित्य कर्म था। डॉक्टर अंबेडकर की माता का नाम भीमाबाई था। उनका स्वभाव अत्यंत सरल और गंभीर था। वे बनावटी जीवन से कोसों दूर थी। डॉ भीमराव अंबेडकर ने अपने जीवन में तमाम यातनाएं झेली, लेकिन इसके बावजूद भी वे इससे कभी घबराए नहीं और अपने कर्तव्य के प्रति सच्ची निष्ठा के साथ आगे बढ़ते रहे और समाज से छूआछूत और जातिवाद जैसी बुराईयों को जड़ से खत्म करने में सफल हुए। डॉ भीमराव अंबेडकर को देश को एकता के सूत्र में बांधने वाले संविधान के निर्माता के रूप में भी जाना जाता है। दलितों के मसीहा कहे जाने वाले डॉ. भीमराव आम्बेडकर मध्यप्रदेश के इंदौर के एक दलित परिवार में जन्में थे। दलित होने की वजह से डॉ भीमराव अंबेडकर को ऊंची जाति के लोग छूना तक पसंद नहीं करते थे, यही नहीं स्कूल में भी शिक्षा हासिल करने के लिए उन्हें तमाम तरह की कठिनाइयां झेलनी पड़ी थी। विद्वान और योग्य होने के बावजूद भी उन्हें उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा था। भेदभाव का शिकार हुए डॉ भीमराव अंबेडकर को अपने आर्मी स्कूल में पानी तक छूने की इजाजत नहीं थी, उनके कास्ट के बच्चों को चपरासी उपर से डालकर पानी देता था, वहीं अगर जिस दिन चपरासी छुड़ी पर होता था, उस दिन उन्हें और उनके कास्ट के सभी साथियों को पूरा दिन प्यासा ही रहना पड़ता था। फिलहाल डॉ भीमराव अंबेडकर ने तमाम मुश्किलों और संघर्षों के बाद भी अच्छी शिक्षा हासिल की और बाद में समाज में



फैली छूआछूत और जातिवाद को जड़ से खत्म कर दिया। डॉ भीमराव अंबेडकर एक होनहार और प्रखर बुद्धि के छात्र थे, वे बहुत तेजी से किसी विषय को जल्दी से समझ लेते थे, यही वजह है कि वे अपनी सभी परीक्षाओं में अच्छे अंक से सफल होते चले गए और १९०७ में उन्होंने मैट्रिक की डिग्री हासिल कर ली और इसके बाद साल १९१२ में उन्होंने मुंबई यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी की। यही नहीं फेलोशिप लेकर उन्होंने अमेरिका के कोलंबिया यूनिवर्सिटी से पोस्ट ग्रेजुएशन की पढ़ाई की।

अमेरिका से लौटने के बाद उनकी प्रतिभा को देखते हुए उन्हें अपने बड़ोदा के राजा ने अपने राज्य का रक्षामंत्री बना दिया, लेकिन इस पद पर रहते हुए भी उन्हें दलित होने की वजह से काफी अपमान झेलना पड़ा था। वहीं कानून की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने ब्रिटिश बार में बैरिस्टर के रूप में काम किया। ८ जून, १९२७ को उन्हें कोलंबिया विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट से सम्मानित किया गया था। इस तरह वे उच्च शिक्षा हासिल करने वाले पहले दलित छात्र बन गए। डॉ भीमराव अंबेडकर ने अपने जीवन में तमाम कठिनाइयां और परेशानियां झेलने के बाद भी कभी हार नहीं मानी और अपनी सच्ची ईमानदारी और कठोर निष्ठा के साथ वह अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए आगे बढ़ते रहे। इसके साथ ही छूआछूत और जातिवाद को समाज से जड़ से खत्म करने के लिए सफलता अर्जित की। और आधुनिक भारत के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र दल के सदस्य के रूप में वह अमेरिका

चले गए। वहां से उन्होंने एम.ए. तथा पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की। वे लंदन में रह कर डीएससी की उपाधि प्राप्त करना चाहते थे लेकिन छात्रवृत्ति का समय समाप्त होने के कारण से भारत लौटे आये। वर्ष १९२८ में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर मुंबई के सिडेनहम कॉलेज में अर्थशास्त्र के अध्यापक के रूप में कार्य आरंभ कर दिया। भारत का संविधान एक हस्तलिखित है। इसमें ४८ आर्टिकल हैं। इस संविधान को तैयार करने में २ साल ११ महीने और १७ दिन का वक्त लगा था। भारत में २६ नवम्बर को हर साल संविधान दिवस मनाया जाता है, क्योंकि वर्ष १९४९ में २६ नवम्बर को संविधान सभा द्वारा भारत के संविधान को स्वीकृत किया गया था जो २६ जनवरी १९५० को प्रभाव में आया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर को भारत के संविधान का जनक कहा जाता है। भारत की आजादी के बाद कांग्रेस सरकार ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर को भारत के प्रथम कानून मंत्री के रूप में सेवा करने का निर्मंत्रण दिया। जब भारत के संविधान को अपनाया गया था तब भारत के नागरिकों ने शांति, शिष्टता और प्रगति के साथ एक नए संवैधानिक, वैज्ञानिक, स्वराज्य और आधुनिक भारत में प्रवेश किया था। भारत का संविधान पूरी दुनिया में बहुत अनोखा है। हम संविधान दिवस को क्यों मनाते हैं भारत में संविधान दिवस २६ नवंबर को हर साल सरकारी तौर पर मनाया जाने वाला कार्यक्रम है जो संविधान के जनक डॉ भीमराव रामजी अम्बेडकर को याद और सम्मानित करने के लिए मनाया जाता है। भारत के लोग अपना संविधान शुरू करने के बाद अपना इतिहास, स्वतंत्रता,

स्वतंत्रता और शांति का जश्न मनाते हैं। संविधान दिवस भारत के संविधान के महत्व को समझाने के लिए हर साल २६ नवंबर के दिन मनाया जाता है। जिसमें लोगो को यह समझाया जाता है कि आखिर कैसे हमारा संविधान हमारे देश की तरक्की के लिए महत्वपूर्ण है तथा डॉ अंबेडकर को हमारे देश के संविधान निर्माण में बहोत कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। आजादी के पहले तक भारत में रियासतों के अपने अलग-अलग नियम कानून थे, जिन्हें देश के राजनितिक नियम, कानून और प्रक्रिया के अंतर्गत लाने की आवश्यकता थी।

इसके अलावा हमारे देश को एक ऐसे संविधान की आवश्यकता थी। जिसमें देश में रहने वाले लोगों के मूल अधिकार, कर्तव्यों को निर्धारित किया गया हो ताकि हमारा देश तेजी से तरक्की कर सके और नयी उचाइयों को प्राप्त कर सके। क्रांतिकारी व्यक्तित्व के धनी डॉक्टर भीमराव अंबेडकर केवल समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा धर्म शास्त्र के ही नहीं वरन विधिशास्त्र के भी प्रकांड विद्वान थे। उनके विधिशास्त्र के ज्ञान के कारण ही उन्हें १९४७ में भारतीय संविधान की ६ सदस्य संविधान समिति का अध्यक्ष चुना गया। इन सदस्यों में से अधिकांश या तो बैठकों में अनुपस्थित रहे या कुछ विदेश चले गए। परिणाम स्वरूप डॉ भीमराव अंबेडकर ने अकेले ही इस कार्य को पूरा किया इसलिए उन्होंने भारतीय संविधान का जनक कहा जाता है। जीवनभर समाज में व्याप्त असमानता, अस्पृश्यता और सवर्णों के दुर्व्यवहार को सहन करते रहने वाले डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने ६ दिसंबर १९५६ को इस संसार से विदा ले ली। भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न की उपाधि से अलंकृत किया। डॉ भीमराव अंबेडकर ने कहा था के ह्यशिक्षित बने, संघटित रहे और संघर्ष करेह्म आज समाज के लोगो इसी चीज कि जरूरत है।

भारत में 40 करोड़ लोगों के रोजगारों पर संकट का साया मंडरा रहा

इस समय दुनिया कोरोना संकट के कारण त्राहिमांम कर रही है। मानव स्वास्थ्य के बुरी तरह प्रभावित होने के साथ ही इससे आम जनजीवन में ठहराव आ गया है। आर्थिक गतिविधियों पर भी इसकी मार पड़ रही है। मौजूदा सूरतेहाल में किसी वैज्ञानिक, रणनीतिकार या अर्थशास्त्री को कोई समाधान नहीं सूझ रहा है। हमें किस्म-किस्म की आशंकाओं और अनहोनी के स्वर सुनाई पड़ रहे हैं। कोरोना से उपजी कोविड-19 महामारी का प्रकोप कब खत्म होगा, इस बारे में साफ-साफ कुछ नहीं कहा जा सकता, अलबत्ता इतना तय है कि यह प्रकोप हमारी आदतों, रहन-सहन और कामकाज के तौर-तरीकों को बदल देगा। यदि हम विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के आकलन पर गौर करें तो इस संकट से दुनिया भर

के देशों, उनकी सरकारों, अर्थव्यवस्थाओं, उद्योग और रोजगारों पर बहुत भयावह असर पड़ने जा रहा है। विश्व व्यापार संगठन के अनुसार इस साल अंतरराष्ट्रीय व्यापार 13 से 32 प्रतिशत तक सिकुड़ सकता है। विश्व बैंक के मुताबिक वैश्विक जीडीपी में 2.1 से 3.9 प्रतिशत तक की गिरावट आ सकती है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष का भी ऐसा ही अनुमान है। वहीं आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन का कहना है कि एक महीने के लॉकडाउन से सालाना जीडीपी वृद्धि दर दो प्रतिशत तक कम हो सकती है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन यानी आइएलओ कहता है कि दुनिया भर में 2.7 अरब कामकाजी लोगों को इसका खामियाजा भुगतना होगा जो वैश्विक कामकाजी आबादी का तकरीबन 81 प्रतिशत हिस्सा है। इस समय

तमाम उद्योग भारी नुकसान उठाकर अस्तित्व के संकट से जूझ रहे हैं। आइएलओ ने एक अप्रैल के अनुमान में कहा कि चालू तिमाही में कोरोना संकट से 19.5 करोड़ लोगों की छंटनी की आशंका है। वहीं पूरे साल के लिए यह आंकड़ा और बड़ा हो सकता है। कुछ क्षेत्र इस आपदा से बहुत बुरी तरह प्रभावित हैं जिनमें दुनिया के करीब 125 करोड़ लोग कार्यरत हैं, उनके रोजगार पर तलवार लटक रही है। खासतौर से निम्न एवं मध्यम आय वाले देशों को इसकी तेज तपिश झेलनी होगी। दुनिया भर में करीब दो अरब कामगारों को असंगठित क्षेत्र में रोजगार मिला हुआ है। इनमें से अधिकांश उभरती अर्थव्यवस्था वाले विकासशील देशों में हैं। ये सभी देश कोरोना संकट के कारण भारी वित्तीय दबाव में हैं।

रमजान के महीने में घरों में नमाज अदा करें, इफ्तार करें : महाराष्ट्र सरकार

संवाददाता

मुंबई। महाराष्ट्र सरकार ने शनिवार को मुसलमानों से अगले सप्ताह शुरू हो रहे रमजान के महीने में कोरोना वायरस के मद्देनजर मस्जिदों एवं किसी अन्य सार्वजनिक स्थानों के बजाय अपने घरों में इफ्तार करने की अपील की। देश में तीन मई तक लॉकडाउन है तथा इस दौरान विभिन्न धर्मों के धर्मावलंबियों द्वारा त्योहार मनाने एवं सार्वजनिक स्थानों पर प्रार्थना आदि करने पर



पाबंदियां लगायी गयी है। केन्द्रीय अल्पसंख्यक

मंत्रालय पहले ही मुसलमानों से नमाज अदा करने के वास्ते एक स्थान पर जमा नहीं होने और सामूहिक इफ्तार नहीं करने की अपील कर चुका है। महाराष्ट्र के अल्पसंख्यक कार्य मंत्री नवाब मलिक ने एक बयान में कहा कि समुदाय के सदस्य नमाज अदा करने या इफ्तार के लिए घरों में, छतों पर या किसी मैदान में इकट्ठा नहीं होना चाहिए। विभाग ने समुदाय के सदस्यों से निर्देशों का कड़ाई से पालन करने को कहा है।

आज से प्रिंट मीडिया को लॉकडाउन से छूट

मुंबई। महाराष्ट्र सरकार ने शुक्रवार को जारी आदेश में संशोधन करते हुए प्रिंट मीडिया को भी 20 अप्रैल से लॉकडाउन में छूट दे दी है। लेकिन अखबारों और मैगजीनों की डोर टु डोर डिलिवरी पर कोरोना वायरस महामारी की वजह से रोक बरकरार रहेगी। शुक्रवार को जारी आदेश में महाराष्ट्र सरकार ने 20 अप्रैल से कुछ क्षेत्रों में गतिविधियों को सशर्त मंजूरी दी थी। सरकार ने यह भी फैसला लिया है कि कमिश्नर और सभी कमिश्नरियों और निदेशालयों के निदेशक भी दफ्तर में बैठेंगे। इन दफ्तरों में 10% स्टाफ की भी मौजूदगी रहेगी। शनिवार को ही महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री अजीत पवार ने कहा, राज्य की अर्थव्यवस्था को कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान चरणबद्ध रूप से गति दी जाएगी। देशव्यापी बंद तीन मई तक प्रभावी रहेगा।

12 लाख से अधिक निर्माण श्रमिकों को मिलेंगे 2000-2000 रुपए

मुंबई। महाराष्ट्र सरकार ने कोरोना वायरस लॉकडाउन के चलते अपनी आजीविका गंवा बैठे 12 लाख पंजीकृत निर्माण मजदूरों को 2000-2000 रुपए देने का शनिवार को निर्णय लिया। ये पाबंदियां 24 मार्च का लगायी गयी थीं जिन्हें बाद में तीन मार्च तक के लिए बढ़ा दिया गया। राज्य के श्रम

मंत्री दिलीप वालसे पाटिल ने कहा कि श्रमिक मुश्किलों से जूझ रहे हैं और उनके लिए रोजमर्रा की जरूरतें पूरा करना कठिन हो रहा है क्योंकि निर्माण गतिविधियां लॉकडाउन के चलते थम गयी हैं। मंत्री ने एक सरकारी बयान में कहा, स्थिति को देखते हुए हरेक उस मजदूर के खाते में प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से



2000 रुपए जमा किये जाएंगे जो महाराष्ट्र बिल्डिंग एवं अन्य निर्माण गतिविधि श्रमिक कल्याण बोर्ड में पंजीकृत हैं। उन्होंने कहा कि बोर्ड में पंजीकृत 12 लाख से अधिक मजदूर इस कदम से लाभान्वित होंगे। बयान के अनुसार मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे, उपमुख्यमंत्री अजीत पवार, वालसे पाटिल

एवं वरिष्ठ नौकरशाहों की एक बैठक में यह निर्णय लिया गया। ठाकरे ने शुक्रवार को कहा था कि कुछ औद्योगिक एवं वाणिज्यिक गतिविधियां नियमों के अनुपालन के आधार पर 20 अप्रैल से फिर से चालू की जाएंगी। कोरोना वायरस से लड़ने के लिए लॉकडाउन और संबंधित नियम लगाये गये हैं।



कोरोना से बेहाल मुंबई, धारावी में बटेगी 'संजीवनी'

मुंबई। कोरोना वायरस ने देश की आर्थिक राजधानी मुंबई की कमर तोड़कर रख दी है। शहर के स्लम एरिया धारावी में भी कोरोना तेजी से पैर पसार रहा है। इन सबके बीच महाराष्ट्र सरकार ने अहम फैसला किया है। स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने बताया कि झुग्गी बस्तियों में कोरोना का संक्रमण रोकने के लिए हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्विन दवा बांटी जाएगी। हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्विन वही दवा है, जिसे भारत

अमरीका, ब्राजील समेत दुनियाभर के कई देशों को दे रहा है। भारत मलेरिया के इलाज में इस्तेमाल होने वाली इस दवा का सबसे बड़ा निर्माता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने इस दवा को कोरोना के इलाज में प्रभावी बताया था जिसके बाद पूरी दुनिया में इसकी मांग तेजी से बढ़ी। ट्रंप ने खुद यह दवा भारत से मांगी थी। महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने कहा कि कोरोना की रोकथाम के लिए झुग्गी बस्ती

में रहने वालों का वर्गीकरण किया जाएगा। हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्विन, क्वारंटीन कैटेगरी और संक्रमित लोगों के संपर्क में आए लोगों की तीन कैटेगरी बनाई जाएगी। इन सभी को हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्विन दवाई देने पर हम विचार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुंबई के धारावी और अन्य हाई रिस्क क्षेत्रों में इसे जल्द प्रयोग में लाया जाएगा। बीएमसी ने अकेले धारावी में ही 29 कंटेनमेंट जोन और 6 रेड जोन बनाए हैं।

(पृष्ठ 1 का शेष)

ट्रंप आया माहमारी लाया

गंभीर बात यह है कि उनके साथ आई टीम का कोई मेडिकल टेस्ट दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एअरपोर्ट पर नहीं किया गया। उनकी टीम गुजरात के अहमदाबाद तक गई। जहां ट्रंप ने स्टेडियम में लाखों लोगों को संबोधित किया। उस वक्त भी अमेरिका में कोरोना से तमाम लोग पीड़ित थे जिसमें वहां के सैनिक तक शामिल थे। स्वयं भारत सरकार का दावा किया था कि विदेश से आए लोगों और उनके संपर्क में आने से व्यक्ति संक्रमित होता है। यह बात तब और पुष्टा हो गई जब लंदन से लखनऊ आई कोनिका कपूर में भी कोरोना वाइरस के लक्षण पाये गए। परंतु, ट्रंप के साथ आई टीम के गले भला कौन घंटी बांधता? किसकी हैसियत की उनका मेडिकल टेस्ट करवाने की जुर्रत करता। इसलिए उनको सकुशल भेज दिया गया। आखिरकार, इसकी गाज तो गिरनी ही थी। सो बलि के बकरे की तलाश शुरू हुई। और जैसा जग जाहिर है। एक तबका गिरफ्त में आ गया। इस पर सारा दोष इसलिए मढ़ दिया गया। क्योंकि,

बचाव में ऐसे लोग कूदे जिन्हें ये लगा कि वे उनके नाम पर राजनीति कर हीरो हो सकते हैं। उन्होंने सब्र से काम लेने की जगह भड़काना प्रारंभ किया, तभी मीडिया ने उनका शिकार कर लिया। वे ये भी नहीं सवाल कर सके कि पंजाब, आसाम, मणिपुर आदि जगह में तो वे गए ही नहीं थे! खैर, नेतागिरी के चक्कर में उन्होंने तमाम लोगों पर गाज गिरवा दी और स्वयं बच निकले। वे लोगों को यह समझाने में भी नाकामयाब रहे कि खुशी-खुशी टेस्ट करवा लें और अपने तथा परिवार को बचाएं। वे लोगों से आह्वान करते कि तबलीकी जमात के लोगों का टेस्ट करवाने में मदद करें और इन लोगों के खाने और रहने का इंतजाम जमात करेगा। मात्र, इतनी सी कोशिश सारे बतंगड़ को खत्म कर सकती थी। परंतु, कौम के इन अलंबरदारों को कौन समझाता। वे ये भी नहीं पूछ सके कि भारत सरकार को कोरोना वाइरस की खबर कब लगी। तब उसने एअरपोर्ट पर बाहर से आए लोगों को कोरंटाइन क्यों नहीं किया! खैर, धर्मगुरुओं की इस गलती ने कौम को बहुत पीछे धकेल दिया है और इसकी कीमत आने वाले वक्त में समाज को चुकानी होगी।

कोरोना: तीन जोन में बंटा महाराष्ट्र, रेड जोन में मुंबई-पुणे

मुंबई। महाराष्ट्र में कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या का आंकड़ा लगातार बढ़ता जा रहा है, जिसको देखते हुए राज्य सरकार ने पूरे राज्य को 3 जोन में बांटा है। पहला रेड जोन, दूसरा ऑरेंज जोन और तीसरा ग्रीन जोन है। रेड जोन में उन इलाकों को रखा गया है जहां कोरोना वायरस के पॉजिटिव मरीजों का आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है। मुंबई, थाने, पालघर, पुणे, नागपुर, रायगढ़, सांगली और औरंगाबाद का नाम शामिल है। महाराष्ट्र में रविवार शाम तक कोरोना मरीजों की संख्या 4200 हो गई। इसके अलावा ऑरेंज जोन उस इलाके या जिले को इंडिकेट करता है, जहां कोरोना पॉजिटिव मरीज तो हैं, लेकिन उनकी संख्या नियंत्रण में है और बढ़ नहीं रही है। ऑरेंज जोन वाले इलाकों में फसलों को काटने और सीमित पब्लिक ट्रांसपोर्ट की इजाजत दी जा सकती है। वहीं, ग्रीन जोन में उन इलाकों को शामिल किया जाएगा जहां कोरोना का कोई मामला सामने नहीं आया है यानी कोरोना पॉजिटिव मरीजों की संख्या शून्य है। महाराष्ट्र के ऑरेंज जोन

में रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, सातारा, कोल्हापुर, नासिक, अहमदनगर, जलगांव, उस्मानाबाद, बीड, जालना, हिंगोली, लातूर, अमरावती, अकोला, यवतमाल, बुलढाना, वाशिम और गोंदिया के नाम हैं। ग्रीन जोन में धुले, नंदूरबार, सोलापुर, परभनी, नांदेड, वर्धा, चंद्रपुर, भंडारा और गढ़चिरोली जैसे जिलों का नाम है। महाराष्ट्र के इन 35 जिलों में से ग्रीन और ऑरेंज जोन में सरकार कुछ उद्योग धंधों को केंद्र द्वारा जारी गाइडलाइंस का पालन करते हुए शुरू करने का आदेश दे चुकी है। काम के दौरान सभी को सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कड़ाई से करना है और कंपनी परिसर में ही रहना है। फैक्ट्री मालिक को ही, श्रमिकों के खाने-पीने और रहने का इंतजाम करना होगा। इस दौरान सरकार का यह भी आदेश है कि कोई भी व्यक्ति अपने जिलों की सीमा पार नहीं कर सकता, फिर चाहे वह किसी भी जोन का निवासी हो। रेड जोन में पूरी तरह लॉकडाउन होगा और इसमें वे इलाके शामिल होंगे जहां संक्रमित लोगों की संख्या बहुत अधिक है।



फर्जी पत्रकारों के खिलाफ पूरे देश में होगी एफआईआर

भारत में सूचना प्रसारण मंत्रालय जाली पत्रकारों एवं फर्जी चैनलों पर शिकंजा कसने को तैयार है जो लोग वगैर आर.एन.आई के अखबार या चैनल चला रहे हैं उन पर सख्त से सख्त कार्रवाई होगी। सूचना एवं प्रसारणमंत्री ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि देश भर में जितने भी लोग प्रेस आई.डी.कार्ड लेकर घूम रहे हैं या फर्जी चैनल चला रहे हैं ऐसे लोगों की तत्काल जांच शुरू होगी। इस मामले में दोषी पाए जाने वाले व्यक्ति पर त्वरित कार्रवाई करते हुए गिरफ्तार कर लिया जाएगा। आगे मंत्री जी ने कहा कि कुछ दोषी लोगों के कारण अच्छे, सच्चे एवं ईमानदार पत्रकारों के छवि खराब हो रही है, एवं उनके कार्य करने में बाधा उत्पन्न हो रही है। आगे जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि पूरे देश में कुछ पैसा लेकर जाली प्रेस आई.डी. बांटने एवं जाली पत्रकार नियुक्ति करने तथा प्रेस के नाम पर ब्लैकमेलिंग करने का धंधा चल रहा है। जिसपर

‘अगर कोई वगैर आरएनआई के पोर्टल या अखबार चलाते मिला तो उस पर उचित कार्रवाई की जाएगी और ऐसे व्यक्ति को हरगिज माफ नहीं किया जायेगा।’

- सूचना एवं प्रसारणमंत्री भारत सरकार



अंकुश लगाना अति आवश्यक है। इस संबंध में सभी राज्यों के प्रेस सूचना मंत्रालय को निर्देश जारी कर दिया गया है। आगे उन्होंने बताया कि जो अखबार/पत्रिका भारत सरकार के आर.एन.आई. द्वारा रजिस्टर्ड हो या जो टीवी/रेडियो सूचना प्रसारण मंत्रालय से रजिस्टर्ड हो उसी के द्वारा पत्रकार/संवाददाता की नियुक्ति हो सकती है व केवल उसका सम्पादक ही प्रेस कार्ड जारी कर सकता है। जब न्यूज पोर्टल के बारे में पत्रकारों ने पूछा तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि इन्टरनेट पर चल रहे न्यूज पोर्टल के रजिस्ट्रेशन का प्रावधान सूचना प्रसारण मंत्रालय में नहीं है एवं कोई भी न्यूज पोर्टल एवं केबल (डिस) टीवी पर चल रहे समाचार चैनल किसी भी तरह के पत्रकार की नियुक्ति नहीं कर सकता है। और न ही प्रेस आई.डी. जारी कर सकता है यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो वह अवैध है एवं उसके विरुद्ध कार्रवाई होनी सुनिश्चित है।

गृह मंत्रालय का आदेश, लॉकडाउन में गैर-जरूरी सामानों की ऑनलाइन डिलीवरी पर छूट नहीं



देश में कोरोना वायरस के संकट से निपटने के लिए लॉकडाउन लागू है। लॉकडाउन के कारण देश में आर्थिक गतिविधियों पर भी ब्रेक लगा हुआ है। इस बीच सरकार ने कहा है कि लॉकडाउन के दौरान गैर-जरूरी सामानों की ऑनलाइन डिलीवरी नहीं होगी। लॉकडाउन लागू किए जाने पर सरकार ने जरूरी सामानों की आपूर्ति को सुनिश्चित किए जाने की बात कही थी। लॉकडाउन में राशन, सब्जी और मेडिकल की दुकानें खुली हैं तो वहीं दूसरी तरफ जरूरी सामानों की होम डिलीवरी भी की जा रही है। हालांकि इस बीच गृह मंत्रालय ने आदेश दिया है कि ई-कॉमर्स कंपनियों के जरिए लॉकडाउन के दौरान गैर-जरूरी सामानों की सप्लाई पर रोक रहेगी। दरअसल, 25 मार्च को लॉकडाउन होने के बाद से ही देश में ई-कॉमर्स कंपनियां सिर्फ जरूरी सामानों की सप्लाई कर रही है।

निर्माता निर्देशक जगबीर दहिया ने दिखाया बड़ा दिल, हर रोज हजारों को खिलाते हैं खाना



कोरोना को हराने के लिए लॉकडाउन पार्ट 2 तीन मई तक जारी रहेगा। काम धंधा बन्द होने से सबसे बड़ी मार गरीब कामगार पर पड़ी है। ऐसे में उनकी मदद के लिए, बॉलीवुड के निर्माता-निर्देशक जगबीर दहिया लॉकडाउन-पार्ट वन की शुरुआत से ही गरीब और जरूरतमंद लोगों तक खाना पहुंचाने का काम कर रहे हैं। जगबीर दहिया ने सूर्या नगर से शुरुवात की और

अब लॉक डाउन पार्ट 2 के आते आते 378 परिवारों को हर सप्ताह राशन देने का काम कर रहे हैं। फिल्म निर्माता जगबीर दहिया द्वारा गरीब परिवारों को सप्ताह भर के राशन के पैकेट में उनकी जरूरत के हर सामान को शामिल किया गया है। एक सप्ताह के राशन में 10 किलो आटा, चावल, चना दाल और छोले के साथ रसोई के मसाले भी दिये जा रहे हैं।

1500 लोगों को हर दिन खिलाते हैं खाना

फिल्म निर्माता जगबीर दहिया जो बहादुरगढ़ हरयाणा के रहनेवाले हैं, जहां गरीब परिवारों को राशन के पैकेट दे रहे हैं। वहीं हजारों लोगों को प्रतिदिन खाना भी खिला रहे हैं। दहिया द्वारा करीब 1500 लोगों को रोजाना खाना खिलाया जा रहा है।

गरीबों में बांटने के लिए प्रशासन को देते हैं 400 लोगों का खाना

फिल्म निर्माता जगबीर दहिया ने बताया कि प्रशासन की मांग पर वो हर रोज करीब 400 लोगों का पका पकाया खाना भी मुहैया करवा रहे हैं और जब तक लॉकडाउन रहेगा वो मदद करते रहेंगे।

फिल्म यूनिट के सदस्यों का भी रख रहे हैं ख्याल: जगबीर दहिया ही वो फिल्म निर्माता हैं जिन्होंने प्रसिद्ध गायक सुखविंदर सिंह को हीरो के रूप में लांच किया था। जगबीर दहिया का कहना है कि वो मुंबई में रह रही अपने फिल्म यूनिट को भी आर्थिक मदद मुहैया करवा रहे हैं। उन्होंने कहा कि फिल्म निर्माण में काफी संख्या में दिहाड़ीदार लोग जुड़े होते हैं। उनकी मदद के लिए उन्होंने उनके खातों में पैसे भी डलवाये हैं। जगबीर दहिया का कहना है कि कोरोना वैश्विक महामारी है और हर किसी को आने सामर्थ्य के हिसाब से लोगों की मदद करनी चाहिए।

23 शर्तों के साथ आज से खुलेगी वाशी की थोक फलमंडी



वाशी एपीएमसी की थोक फलमंडी 20 अप्रैल से खुलेगी। इसके लिए बाजार समिति प्रशासन तैयारियों में लग गया है। इस सिलसिले में शनिवार को बाजार समिति के सचिव के साथ संबंधित अधिकारियों व प्रतिनिधियों की एक संयुक्त बैठक हुई। बैठक में बाजार समिति के सहायक सचिव, उपसचिव (फलमंडी), संचालक तथा द फ्रूट ऐंड वेजीटेबल मर्चेंट्स असोसिएशन के अध्यक्ष शामिल थे। लॉकडाउन के दौरान कोई दिक्कत न आए और कोरोना के प्रसार को बढ़ने न दिया जाए, इस संबंध में ऐतिहासिक

बर्तने के लिए बैठक में कई निर्णय लिए गए। नए नियमों के तहत थोक फलमंडी में मौजूद सभी लोकल टेंपो को शाम 5 बजे से पहले हर हाल में निकल जाना होगा। थोक फलमंडी में प्रवेश लेने वाले सभी वाहनों को 2 घंटे में अपना काम करके मंडी से बाहर निकल जाना होगा। खेतों से फल लेकर देर से आए सभी वाहनों को सुबह 7 बजे तक अपना माल खाली कर बाजार परिसर से बाहर निकल जाना होगा। इस तरह की कुल 23 अनिवार्य शर्तों के साथ थोक फलमंडी को शुरू करने की अनुमति दी गई है।

सिर्फ 250 गाड़ियों को मिलेगा प्रवेश

बैठक में यह निर्णय लिया गया कि वाशी की थोक फलमंडी में प्रतिदिन फलों से भरे सिर्फ 250 वाहनों को ही प्रवेश दिया जाएगा। यह बात बाजार समिति प्रशासन व पुलिस प्रशासन ने अनिवार्य कर दी है। एक दिन में इससे अधिक आने वाले वाहनों को फलमंडी में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

व्यापारियों को सुझाव

फलमंडी के थोक व्यापारियों को बता दिया गया है कि वे दैनिक स्तर पर आपस में बैठकर सभी फलों को थोकमंडी में मंगाने से पूर्व फलों की मात्रा निश्चित कर लिया करें, ताकि कुल वाहनों की संख्या 250 से कम ही रहे।

प्रवेश व व्यापार समय सीमा भी तय

बाजार समिति ने यह स्पष्ट कर दिया है कि थोक फलमंडी में आने वाले वाहनों को सुबह 9 बजे से लेकर शाम 5 बजे तक ही प्रवेश दिया जाएगा। इससे पहले व बाद में किसी वाहन को प्रवेश नहीं मिलेगा। थोक फलमंडी परिसर में व्यापारियों के लिए सुबह 7 बजे से लेकर दोपहर 3 बजे तक का समय निर्धारित किया गया है।

15 हजार तक की खरीदारी अनिवार्य

थोक व्यापारियों को कहा गया है कि वे खुदरा व्यापारियों को सीमित संख्या में प्रवेश दें। खुदरा व्यापारियों के सामने कम से कम 15,000 रुपये की खरीदारी करने की शर्त रखी गई है। इससे कम खरीदारी करने वाले खुदरा विक्रेताओं को थोक फलमंडी में प्रवेश नहीं मिलेगा। प्रवेश पर नियंत्रण रखने के लिए फलमंडी के प्रवेशद्वार पर ही खुदरा व्यापारियों को अपनी दैनिक खरीदारी का विवरण अनिवार्य रूप से दर्ज कराना होगा।

रोजी पर संकट आया तो बोले डिब्बावाले...

‘हमारे खाते में भी दो-दो हजार भेज दो सरकार’

महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई के प्रसिद्ध डिब्बावालों ने प्रदेश सरकार से आर्थिक मदद की गुहार लगाई है। इन डिब्बावालों ने सरकार से अनुरोध किया है कि रजिस्टर्ड कामगारों की तरह इनके भी खाते में 2 हजार रुपये भेजे जाएं। डिब्बावालों की दलील है कि बंदी के कारण उनके भरण-पोषण के लिए मिलने वाली तनख्वाह बंद हो गई है, ऐसे में उन्हें आर्थिक सहायता की सख्त जरूरत है। मुंबई में लोगों तक समय पर घर का खाना पहुंचाने के लिए मशहूर डिब्बावालों ने कोरोना के इस संकट में अपनी मांग सीएम उद्धव ठाकरे के सामने रखी



है। डिब्बावाला असोसिएशन के अध्यक्ष उल्हास मुके ने बताया कि मुंबई के 5 हजार डिब्बावाले फिलहाल वेतन न मिलने से परेशान हैं। असोसिएशन के लोगों का कहना है कि महाराष्ट्र में जिस तरह से हालात बने हुए हैं, ऐसे में 3 मई के बाद लॉकडाउन खत्म होने की कोई

संभावना नजर नहीं आती है। इन स्थितियों को देखते हुए सरकार को 5 हजार से अधिक डिब्बा वालों के लिए आगे आना चाहिए और इनकी सहायता के लिए खातों में 2 हजार रुपये की आर्थिक सहायता भेजनी चाहिए। बीजेपी विधायक राम कदम ने भी सरकार से डिब्बावाला एसोसिएशन की मदद की मांग की है। इसके अलावा विधायक राम कदम ने शहर में टैक्सी चलाने वाले कामगारों को भी मदद देने की बात कही है और कहा है कि ऐसे ड्राइवर भी अपने जीवन यापन के लिए दैनिक कमाई के ही आश्रित हैं।

राज्यों में फंसे प्रवासी मजदूरों के लिए सरकार का प्लान



संवाददाता इन दिनों कोरोना वायरस की वजह से पूरे देश में लॉकडाउन है। इस लॉकडाउन की वजह से बहुत सारे प्रवासी मजदूर अपने घरों से दूर दूसरे राज्यों में फंसे हुए हैं। बहुत सारे तो पैदल ही घर के लिए निकल पड़े थे, जिन्हें सीमाओं पर रोककर क्वारंटीन में रख दिया है। गृह मंत्रालय ने तमाम राज्यों में फंसे इन प्रवासी मजदूरों के आने जाने को लेकर कुछ गाइडलाइन्स या यूं कहें कि स्टैंडर्ड ऑपरेंटिंग सिस्टम (एसओपी) जारी की है। इसके अनुसार किसी भी लेबर को राज्य से बाहर जाने की इजाजत नहीं है, लेकिन राज्य के अंदर ही उनका मूवमेंट कुछ नियमों को ध्यान में रखते हुए हो सकता है। सरकार ने ये फैसला किया है कि इन फंसे हुए मजदूरों का इस्तेमाल इंडस्ट्री, एग्रिकल्चर, कंस्ट्रक्शन और अन्य कामों में किया जा सकता है। 20 अप्रैल के बाद से संक्रमण जोन के बाहर तमाम काम करने की इजाजत मिल चुकी है, ऐसे में वहां काम करने वालों की जरूरत होगी, जो कमी ये प्रवासी मजदूर पूरी कर सकते हैं। इन मजदूरों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए कुछ गाइडलाइन्स जारी की गई हैं।

ये हैं दुनिया के सबसे छोटे देश, घूमने के लिए चाहिए सिर्फ 15 मिनट

गर्मियों की छुट्टियों में हर कोई कहीं न कहीं घूमने का प्लान बनाता है। मगर दुनिया में किसी भी जगह को अच्छी तरह एक्सप्लोर करने के लिए कम से कम 3-4 दिन का समय तो चाहिए ही होता है लेकिन आज हम आपको कुछ ऐसे शहरों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्हें आप 15 मिनट में ही घूम सकते हैं। दरअसल, इन जगहों को दुनिया के सबसे छोटे शहरों की लिस्ट में शामिल किया गया है। छोटे होने के बावजूद भी आप इन शहरों में अपने ट्रिप का पूरा मजा ले सकते हैं। तो चलिए जानते हैं ऐसी ही कुछ जगहों के बारे में, जहां आप केवल 15 मिनट में ही घूम सकते हैं।



1. पश्चिमी यूरोप, मोनाको
आपको जानकर हैरानी होगी कि यह शहर 2 स्क्वायर किलोमीटर में बसा हुआ

है। अपने कसीनो और रेस ट्रैक्स के लिए फेमस इस शहर को आप 15 मिनट में ही घूम सकते हैं। अगर आपको फुटबॉल

का शौक है तो आपको यहां और भी मजा आएगा क्योंकि इस देश की फुटबॉल टीम वर्ल्ड की बेस्ट टीमों में से एक है।

2. अमेरिका, सेंट जॉन्स
कैरिबियन सागर और आंध्र महासागर के बीच स्थित यह शहर छोटा होने के साथ-साथ सबसे ठंडा भी है। इस शहर में केवल 2 लाख लोग ही रहते हैं। गर्मी के मौसम में भी यहां का तापमान 18 डिग्री तक रहता है। इसलिए गर्मी के मौसम में इस शहर में जरूर घूमने का प्लान बनाएं।

3. ऑस्ट्रेलिया, नाउरू
इसे दुनिया का तीसरा सबसे छोटा शहर माना जाता है। ओवल शेप शेप में बना यह शहर 53 किलोमीटर में ही सिमट जाता है। वैसे तो यहां सबसे कम विजिटर्स आते हैं लेकिन सुकून से छुट्टियां बिताने के लिए यह शहर एकदम परफेक्ट है। इस देश में खूबसूरत बीचों

हैं जहां आप अच्छा खूब मस्ती कर सकते हैं।

4. कैरिबियाई सागर, ग्रेनाडा
6 द्वीपों को मिलकर बना यह छोटा-सा शहर दुनिया के सबसे छोटे देशों की सूची में शामिल है। यह खूबसूरत और प्राकृतिक शहर 34 किलोमीटर तक फैला हुआ है। आप यहां सी बीच, वॉटर फॉल, अंडर वॉटर पार्क स्कल्पचर और हाउस ऑफ चॉकलेट देख सकते हैं।

5. मालदीव
अगर आप समुद्र का किनारे अपनी छुट्टियां बिताने की सोच रहे हैं तो मालदीव आपके लिए बेस्ट है। यहां पर आप शांति के कुछ पल बिता सकते हैं। खासतौर पर अगर आप शादी के बाद मिनी हनीमून के लिए कोई जगह तलाश रही हैं तो यह डेस्टिनेशन आपके लिए बेस्ट है।

मुंबई हलचल राशिफल

-आचार्य परमानंद शास्त्री

मेघ: जोखिम व जमानत के कार्य टांके। जल्दबाजी से हानि संभव है। कीमती वस्तुएं सभालकर रखें। धैर्य रखें।

वृष: राजकीय सहयोग प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। वैवाहिक प्रस्ताव मिल सकता है। प्रमाद न करें।

मिथुन: उन्नति होगी। संपत्ति के बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। प्रसन्नता रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा।

कर्क: मनपसंद भोजन का आनंद मिलेगा। मनोरंजक यात्रा होगी। बौद्धिक कार्य सफल रहेंगे। लाभ होगा।

सिंह: मेहनत अधिक होगी। लाभ में कमी रहेगी। अपेक्षाकृत कार्यों में विलंब होगा। तनाव रहेगा।

कन्या: मेहनत का फल पूरा-पूरा मिलेगा। कार्य की प्रशंसा होगी। धन प्राप्ति सुगमता से होगी।

तुला: जल्दबाजी न करें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अच्छी खबर मिलेगी। प्रसन्नता में वृद्धि होगी। झंझटों में न पड़ें।

वृश्चिक: नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी। यात्रा, नौकरी व निवेश मनोकूल रहेंगे। प्रसन्नता रहेगी।

धनु: व्ययवृद्धि से तनाव रहेगा। अपेक्षाकृत कार्यों में देरी होगी। दुश्जन हानि पहुंचा सकते हैं।

मकर: डूबी हुई रकम प्राप्त हो सकती है। यात्रा, निवेश व नौकरी मनोकूल रहेंगे। प्रसन्नता रहेगी।

कुंभ: योजना फलीभूत होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। नौकरी में अधिकार बढ़ेंगे। मान-सम्मान मिलेगा।

मीन: तंत्र-मंत्र में रुचि रहेगी। राजकीय सहयोग मिलेगा। आय में वृद्धि होगी। प्रसन्नता बनी रहेगी।

किसी राजमहल से कम नहीं है महाराजा एक्सप्रेस



दूर किसी जगह पर जाने के लिए ज्यादातर लोग रेल गाड़ी का ही इस्तेमाल करते हैं। आप ने दुनियाभर में बहुत सी रेलगाड़ियां देखी होंगी। उन में सफर भी किया होगा। मगर आज हम आपको

एक ऐसी रेलगाड़ी के बारे में बताएंगे जो भारत की सबसे महंगी और सुविधाओं से भरपूर है। इस ट्रेन में फाइव स्टार जैसी सारी सुहुलते हैं। वह रेलगाड़ी है महाराजा एक्सप्रेस।

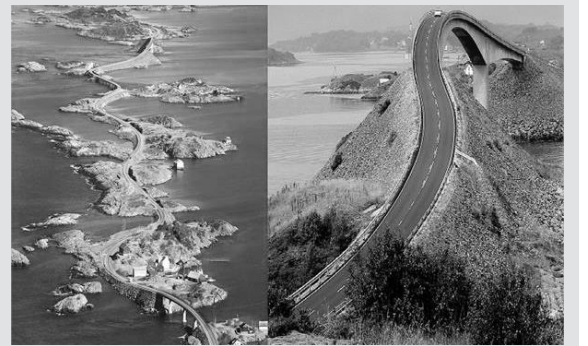
इस रेलगाड़ी में बड़ी बड़ी-बड़ी खिड़कियां हैं। लोगों के मनोरंजन के लिए टेलीविजन भी है। रेलगाड़ी में को चार भागों में विभाजित किया गया है। इसमें 20 डीलक्स केबिन है, 18 जूनियर स्वीट, 64 स्वीट और एक प्रेसिडेंशियल स्वीट है। यह रेलगाड़ी भारत के सभी ऐतिहासिक राज्यों से होते हुए गुजरती है। इस रेलगाड़ी में होटल की हर सुविधा है। इसमें 14 सैलून, एक स्पा कोच, दो महाराजा-महारानी रेस्टोरेंट और एक रिसेप्शन कम बार कोच है। साल 2010 में इसे विश्व की सबसे लम्बरी रेलगाड़ियों की सूची में चौथा स्थान दिया गया था।

ये हैं गरीबी रेखा के नीचे क्योंकि इनके पास है बस एसी और कार

अभी तक तो यही कहा जाता था कि जो लोग गरीबी रेखा से नीचे होते हैं उनके पास दो वक्त खाने का भी इंतजाम हो पाना मुश्किल होता है, लेकिन अब आप अपनी सोच बदल लीजिए। क्योंकि नोएडा-ग्रेटर नोएडा में गरीबी रेखा के नीचे के व्यक्ति के पास सुख-सुविधा के छोटे-मोटे तो सामान छोड़ ही दीजिए, उनके पास एसी व कार तक मौजूद है। यह बात पिछले दिनों हुए जिला प्रशासन के सर्वे में सामने आई है। हालांकि इन्हें देखने के बाद जिला प्रशासन ने गरीबी रेखा के नीचे होने का दावा कर के जिले में बनाए गए 11477 राशन कार्ड को निरस्त कर दिया है। इसमें ज्यादातर लोगों के पास एसी, कार के अलावा सुख-सुविधा के ज्यादातर सामान मौजूद हैं। प्रशासन के सर्वे में यह भी उजागर हुआ है कि गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले तमाम लोगों ने परिवार में सदस्यों की संख्या बढ़ाकर राशन कार्ड बनवा लिया था। सर्वे के बाद प्रशासन ने 5455 राशन कार्ड में संशोधन भी किया है।

ऐसा माना जा रहा है कि ये फर्जी राशन कार्ड रसूखदार लोगों के माध्यम से बने थे। ये जानकारी प्रशासन को जांच में पता चली है। ये लोग प्रति व्यक्ति प्रतिमाह दो सौ रुपये लेकर यह काम करते थे। प्रशासन ऐसे लोगों को चिह्नित कर रहा है और इनके खिलाफ जल्द ही कार्रवाई होगी। इनके कोटेदार से भी संबंध की बात भी सामने आई है। प्रशासन की सख्ती के बाद 12 कोटेदार ने कोटा सरेंडर का आवेदन किया है। जानकारी देते हुए संबंधित विभाग ने बताया कि जिलाधिकारी के निर्देश पर गरीबी रेखा के नीचे के लोगों का आगनबाड़ी व लेखपाल से सर्वे कराया गया। जिसमें पाया गया है कि विभिन्न सरकारी सुविधा को लेने के लिए एसी व कार रखने वाले लोगों या परिवार ने भी खुद को गरीबी रेखा के नीचे दिखाकर राशन कार्ड बनवा लिया है। ऐसे लोगों व परिवारों को चिह्नित कर राशन कार्ड को निरस्त कर दिया गया है।

दुनिया की खतरनाक सड़कें, सफर करने से पहले सोचेंगे 10 बार



किसी खूबसूरत जगह का नजारा लेने के लिए लंबा सफर तैय करना पड़ता है। अगर सफर के लिए सड़कें खूबसूरत हो तो मजा दोगुना बढ़ जाता है। वैसे तो दुनिया में कई खूबसूरत सड़कें हैं, जिनकी खूबसूरती हर किसी को मोह लेती है लेकिन आज हम ऐसी सड़कों के बारे में बताने जा रहे हैं, जो सफर करने के लिए खूबसूरत तो हैं लेकिन उतनी ही रोमांचक या फिर थुं कहे खतरनाक भी हैं। इन सड़कों पर सफर करना किसी रोमांच से कम नहीं है।

1. अटलांटिक रोड, नॉर्वे

नॉर्वे एक ऐसा देश है, जहां दिन में सूरज दिखे न दिखे लेकिन आधी रात में जरूर नजर आता है। वहीं नॉर्वे के अटलांटिक रोड से गुजरना किसी खतरनाक सफर से कम नहीं है। यह बेहद रिस्की रोड 1986 में शुरू किया गया था, जिसका निर्माण 64 कंट्री रोड के रूप में किया गया था। अटलांटिक रोड नॉर्वे के समुद्र में कई आइलैंड्स को जोड़ता है, जिसकी लंबाई 5.2 मील है।

2. गुओलियांग टनल रोड, चीन

यह सुरंगदार हाईवे यह के ग्रामिणों द्वारा बनाया गया है, जिसे 5 साल में तैयार किया गया। यह सुरंगरूपी सड़क 1,200 मीटर लंबी 13 फुट चौड़ाई और 16 फीट ऊंचाई है। तैहांग माउंटन पर मौजूद इस टनल में जरा सी चूक भारी पड़ सकती है।

3. व्हाइट रिम ट्रेल

सड़कों के मामले में सबसे अव्वल अमेरिका है। कैनेनलैंड्स नेशनल पार्क से होकर गुजरने वाली इस खतरनाक 100 मील लंबा रास्ता है। सही मौसम के वक्त इस रास्ते को पार करने में फोर व्हीलर से दो-से तीन दिन का समय लगता है। ग्रीन नदी में उफान के दौरान यहां जाना खतरा से खाली नहीं है।

4. कोल दे तूरिनी, फ्रांस

इस जगह पर आपको 19 मील लंबी सड़क का सफर तैय करना होगा। इस रोड को लगभग 1 कि.मी ऊंचा रोड भी कहा जाता है। इसमें आपको लगभग 34 खतरनाक मोड़ ऐसे हैं, जहां सफर करते समय जान थेली पर रखनी पड़ती है।

डैमेज बालों से छुटकारा पाने के लिए अपनाएं एरोमा थेरेपी

बढ़ते प्रदूषण और धूल-मिट्टी के कारण बाल बहुत जल्दी गंदे तो होते ही हैं साथ ही में यह डैमेज भी हो जाते हैं। लड़कियां इन्हें खूबसूरत और सिल्की बनाने के लिए कई तरह के शैम्पू, कंडीशनर, तेल आदि का इस्तेमाल करती हैं लेकिन इनका फायदा बहुत कम और थोड़ी देर के लिए ही दिखाई देता है। अगर आप ऐसे मौसम में बालों की सही तरह से देखभाल नहीं करेंगे तो बाल कमजोर होकर झड़ने शुरू हो जाएंगे। इसलिए बालों को मुलायम और शाइनिंग लाने के लिए एरोमा थेरेपी बहुत कारगर उपाय है। आज हम आपको एरोमा थेरेपी और इससे होने वाले फायदों के बारे में बताएंगे, जिसे इस्तेमाल करके रखें और बेजान बालों में जान ला सकते हैं।

एरोमा थेरेपी

एरोमा थेरेपी में नैचुरल तेल का इस्तेमाल किया जाता है, जिसका



किसी भी तरह के साइड इफैक्ट भी नहीं होता। इस थेरेपी में सुगंध के जरिए रोगों का इलाज किया जाता है। इसे करवाने से बाल को खूबसूरत होते ही हैं, साथ ही में मस्तिष्क, स्नायुतंत्र आदि को भी फायदा मिलता है। इस थेरेपी के लिए खुशबू वाली चीजें जैसे पेड़-पौधे, पत्तियां, जड़, तना, फल-फूल, कुछ सब्जियां, मसाले आदि का इस्तेमाल किया

जाता है। इसमें से डिस्टिलेशन पद्धति द्वारा अर्क निकाला जाता है जिसे 'एसेन्शियल ऑयल' का नाम दिया गया है। इसी अर्क से किए जाने वाले इलाज को एरोमा थेरेपी कहा जाता है।

एरोमा थेरेपी के लाभ

इस थेरेपी में बालों के लिए ईथर का तेल, जैतून का तेल, खाड़ी तेल, केडरवुड, चकोतरा, जोजोबा तेल, लैवेंडर, नीबू,

मेहंदी, रोमन कैमोमाइल आदि का तेल इस्तेमाल किया जाता है। इन तेलों में एंटीसेप्टिक, एंटीवायरल गुण पाए जाते हैं जो बालों को झड़ने से रोकते हैं और उन्हें बढ़ने में मदद करते हैं, साथ ही में डैमेज बालों में जान डाल देते हैं। इसके अलावा इससे दिमाग को भी आराम मिलता है। अन्य फायदे

1. तनाव में रहने वाले लोगों के लिए यह बहुत फायदेमंद थेरेपी है। इस उपाचार से कुछ समय के लिए सुकून और शांति मिलती है। इसके अलावा तनाव से भी राहत मिलती है और दिमाग टेंशन फ्री रहता है।
2. एरोमा थेरेपी कराने से स्किन प्रॉब्लम्स जैसे झाड़ियां, कील मुहांसों आदि से छुटकारा मिलता है। इसके अलावा आंखों के डार्क सर्कल से भी राहत मिलती है। गर्मियों में होने वाली घमौरियों से राहत पाने के लिए एरोमा थेरेपी काफी कारगर उपाय है।

सास-बहू में जरूर होनी चाहिए ये अंडरस्टैंडिंग, तभी रिश्ते में बना रहेगा प्यार

शादी के बाद एक लड़की का रिश्ता

केवल अपने पति तक ही सीमित नहीं होता बल्कि ससुराल के बाकी सदस्यों से भी खास रिश्ता बन जाता है। वहीं सास-बहू का रिश्ता भी काफी मायने रखता है क्योंकि पूरे परिवार की जिम्मेदारी और घर की सुख-शांति इनके हाथों में टिकी होती है।

इसलिए इनके रिश्ते में प्यार और एक-दूसरे के लिए आदर-सम्मान होना बहुत जरूरी है, ताकि घर का माहौल हमेशा अच्छा और खुशी भरा बना रहे। कई बातें ऐसी हैं जो शादी के बाद बहू अपनी सास से कहना चाहती है। अगर सास उन्हें समझने की कोशिश करें तो जिंदगी बिताना आसान हो जाता है।

1. मुझ पर भरोसा करे
सासू मां मुझे पता हैं कि मैं आपकी तरह हर काम में परफेक्ट तो नहीं हो सकती लेकिन सभी काम को अच्छे से करने की कोशिश जरूर करूंगी, बस आप मुझ पर भरोसा रखें।
2. मुझे बहू नहीं, अपनी बेटी समझें
मैं जानती हूँ कि आप मुझे आदर्श बहू के रूप में देखना चाहती हैं लेकिन आप मुझे अपनी बहू नहीं, बेटी समझें और मैं भी आपकी सेवा एक बेटी की तरह ही करूंगी।
3. आपका बेटा, हमेशा आप ही का रहेगा
शादी के बाद अक्सर मां को बेटे को खो देने का डर बना रहता है। ऐसे में बहू अपनी सासू मां से केवल इतना ही कहना चाहती है शादी हो गई



तो क्या, आपका बेटा हमेशा आपका ही रहेगा। आपका उसपर पूरा हक है लेकिन यह न भूले कि वो मेरा हसबैंड भी है।

4. मैं आपकी इज्जत करती हूँ
मैं आपसे नफरत करती हूँ और आपसे लड़ने के बहाने ढूँढती हूँ, तो आप गलत हैं। मैं आपकी इज्जत करती हूँ और आपको अपनी मम्मी जैसा सम्मान देना चाहती हूँ।
5. रिश्तेदारों की बातों में न आए
प्यारी सासू मां रिश्तेदारों और लोगों की बातों में मत आए क्योंकि हमारी लड़ाई और बहस का कारण ही यही है। इसलिए लोगों की बातें सुनना और उन्हें मानना छोड़ दें।
6. मुझे परिवार का हिस्सा ही माने
सासू मां माना की मैं आपका घर जन्म नहीं लिया है लेकिन मुझे पराई समझने के बजाए अपने परिवार का एक सदस्य ही मानें और हर बात के लिए बेटे को ही प्राथमिकता न दें।

सनबर्न के दाग से छुटकारा दिलाएंगे ये टिप्स, आप भी करें ट्राई

तेज धूप में घर से बाहर निललते ही सूरज की किरणें त्वचा को झुलसा कर रख देती हैं। जिससे स्किन काली पड़ जाती है, धूप के कारण आए इस कालेपन को सनबर्न कहते हैं। गर्मी में त्वचा की देखभाल करने की जरूरत ज्यादा होती है क्योंकि इससे चेहरा डल दिखाई देने लगता है, फिर चाहे त्वचा रूखी हो या फिर ऑयली। रोजाना ही अगर सनबर्न से छुटकारा पाने के लिए कुछ उपाय अपनाए जाए तो इससे चेहरे की झुर्रियां, डाकनिस, त्वचा की लालगी आदि सहित और भी बहुत सी परेशानियों से छुटकारा पाया जा सकता है।

ऐसे करें आंखों की देखभाल

आंखों के आसपास धूप का असर ज्यादा पड़ता है। इसके लिए बादाम भिगो कर रखे हुए बादाम को पीस कर चंदन का पाउडर मिलाएं। इस पेस्ट को डार्क सर्कल पर 20-25 मिनट के लिए लगाएं और धो लें। इसके बाद बर्फ से आंखों पर बर्फ को हल्के हाथों से रगड़ें।

ऐसे करें ऑयली स्किन की केयर

धूप का ऑयली स्किन पर ज्यादा असर पड़ता है। जिससे पिंपल्स, झुर्रियां आदि ज्यादा दिखाई देती हैं। आप खीर से फेस केयर करके जल्दी सनबर्न से राहत पा सकते हैं।



स्टेप 1: खीर को फ्रीजर में 20-25 मिनट तक ठंडा करें।

स्टेप 2: इसके बारीक स्लाइस काटकर कर चेहरे पर रगड़ें।

स्टेप 3: इसे 10 मिनट चेहरा पर लगा रहने दें।

स्टेप 4: बाद में ठंडे पानी से धो लें।

स्टेप 5: फिर आईस क्यूब लेकर त्वचा पर हल्का-सा रगड़ें। इससे सनबर्न, झुर्रियां और दाग धब्बे छिप जाते हैं।

सनबर्न से ऐसे करें त्वचा का बचाव

तेज गर्म हवाएं त्वचा को बुरी तरह से नुकसान पहुंचाती हैं। चेहरे का नैचुरल निखार बनाए रखने के लिए इस तरह करें देखभाल। पुदीने की पत्तियों के रस में गुलाब जल मिला कर चेहरे पर 15-20 मिनट के लिए लगा लें। इसके बाद ठंडे पानी से चेहरा धोकर इस पर बर्फ रगड़ें। त्वचा से दाग-धब्बे और कालापन दूर हो जाएगा।

इन 10 ड्राई फ्रूट्स में होता है भरपूर आयरन, रोजाना खाएं

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जितनी जरूरत विटामिन्स और मिनरल्स की होती है। उतनी ही आवश्यकता आयरन की भी होती है। इसकी कमी होने पर थकावट रहना, सांस लेने में तकलीफ, मांसपेशियों में दर्द, चेहरे की रंगत फीकी पड़ना, नाखूनों का टूटना, दर्दनाक पीरियड्स, सिर दर्द रहना, बाल झड़ना जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। शरीर में आयरन की कमी को पूरा करने के लिए अपनी डाइट में इन 10 ड्राई फ्रूट्स को जरूर शामिल करें। इनमें आयरन की भरपूर मात्रा पाई जाती है। इनको खाने से कभी भी आयरन की कमी नहीं होती तो आइए जानते हैं उन ड्राई फ्रूट्स के बारे में।

1. बादाम

बादाम खाना हर किसी को पसंद होता है। जब भी शरीर में आयरन की कमी हो तो बादाम खाएं। 10 ग्राम ड्राई रोस्टेड बादाम में 0.5 मिलीग्राम आयरन होता है। इसमें आयरन के अलावा कैल्शियम और मैग्नीशियम भी पाए जाते हैं जो शरीर को स्वस्थ रखने का काम करते हैं।

2. काजू

सुखे मेवों में काजू सबसे ज्यादा टेस्टी होता है। टेस्टी होने के साथ ही यह हेल्दी भी होता है। इसमें पोटेसियम, मैग्नीशियम, फास्फोरस, प्रोटीन, फाइबर, विटामिन ई, विटामिन बी 6 के अलावा आयरन की भी भरपूर मात्रा पाई जाती है। 10 ग्राम काजू में 0.3 मिलीग्राम आयरन होता है। जो स्वस्थ रहने के लिए बहुत ही जरूरी है।

3. अखरोट

अखरोट को ब्रेन फूड के नाम से भी जाना जाता है। इसको खाने से स्मरणशक्ति बढ़ती है। इसके अलावा 14 ग्राम अखरोट में 0.7 मिलीग्राम आयरन होता है। रोजाना अखरोट का सेवन करने से आयरन की कमी नहीं होती।



आयरन

4. पाइन नट्स

इसमें भी आयरन की भरपूर मात्रा होती है। क्या आप जानते हैं कि 10 ग्राम पाइन नट्स में 0.6 मिलीग्राम आयरन होता है, जो शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जरूरी होता है। आप इसको कच्चा या भुन कर भी खा सकते हैं।

5. पिस्ता

पिस्ते में कई सारे पोषक तत्व और मिनरल्स पाए जाते हैं। इसको खाने से कभी भी आयरन की कमी नहीं होती। 28 ग्राम पिस्ते में 1.1 मिलीग्राम आयरन होता है। पिस्ते में मैग्नीशियम और विटामिन बी भी मौजूद होता है।

6. मूंगफली

मूंगफली में आयरन, कैल्शियम और फाइबर पाया जाता है। रोजाना मूंगफली के 2 बड़े चम्मच खाने से शरीर को 0.6

मिलीग्राम आयरन मिलता है। अगर आपके शरीर में आयरन की कमी हो तो मूंगफली खाना शुरू करें।

7. किशमिश

किशमिश आसानी से मिलने वाला ड्राई फ्रूट होता है। इसमें भी आयरन की अच्छी मात्रा पाई जाती है। रोजाना थोड़े से किशमिश खाने से आपको फायदा मिलेगा।

8. खुबानी

आयरन की कमी को पूरा करने के लिए खुबानी का सेवन करें। इसको खाने से न तो शरीर में आयरन की कमी होती है और ना ही प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन्स की। स्वस्थ रहने के लिए खुबानी जरूर खाएं।

9. अंजीर

अंजीर का सेवन करने के लिए रात को 2 अंजीर को पानी में भिगोने के लिए रख दें। अब सुबह इसका पानी और अंजीर दोनों को सेवन करें। इनको खाने से हीमोग्लोबिन बढ़ता है।

10. मैकाडामिया नट्स

मैकाडामिया नट्स में भी आयरन की अच्छी मात्रा पाई जाती है। रोजाना इसका सेवन करने से शरीर में कभी आयरन की कमी नहीं होगी।



फिर एक होने जा रहे हैं इमरान खान और अवंतिका मलिक?

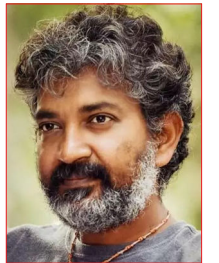
फिल्म ऐक्टर इमरान खान काफी समय से बड़े पर्दे से दूर हैं और आखिरी बार वह फिल्म 'कट्टी-बट्टी' में नजर आए थे। इसके बाद से वह लगातार अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में बने हुए हैं। बीते साल 2019 में इमरान खान की पत्नी अवंतिका मलिक से अलगाव की कई खबरें आई थीं। हालांकि दोनों ने कभी भी इस पर खुलकर बात नहीं की लेकिन सोशल मीडिया पोस्ट से स्पष्ट था कि दोनों ने एक-दूसरे से ब्रेक ले लिया है। अवंतिका मलिक ने काफी समय के बाद इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर की है। यह पोस्ट काफी कुछ इशारा कर रही है। इस पोस्ट को देखकर ऐसा लग रहा है कि दोनों ने अपने रिश्ते को एक और मौका देने का फैसला किया है। इस पोस्ट से लोग यही कयास लगा रहे हैं कि अवंतिका मलिक और इमरान खान फिर से साथ आ सकते हैं। अवंतिका मलिक ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपनी बेटी इमारा के साथ एक बहुत खूबसूरत तस्वीर शेयर की है। इसमें वह बेटी को किस करती नजर आ रही हैं। उन्होंने इस तस्वीर के साथ लिखा, 'मैंने प्यार के साथ रहने का फैसला किया है। नफरत बहुत भारी बोझ है ढोने के लिए। -मार्टिन लूथर किंग जूनियर। जब मुझे दुनिया में भरोसा करने के लिए कुछ चाहिए था तब ब्रह्मांड ने मुझे इशारा भेजा... जादू!!'

सोनाक्षी सिन्हा से फॉलोअर्स ने पूछे 'रामायण' पर सवाल

ट्रोलर्स का मुंह कैसे बंद करना है, सोनाक्षी सिन्हा को बखूबी आता है। लंबे वक्त से उन्हें 'रामायण' को लेकर ट्रोल किया जा रहा है। एक बार फिर सोशल मीडिया पर लोगों ने उनसे 'रामायण' से जुड़े सवाल किए तो उन्होंने सटीक जवाब दिया। बीते साल 'कौन बनेगा करोड़पति' के एपिसोड में सोनाक्षी रामायण से जुड़े एक सवाल का जवाब नहीं दे पाई थीं। उनसे पूछा गया था कि हनुमान संजीवनी बूटी किसके लिए लाए थे इसके लिए उन्होंने लाइफलाइन यूज की थी। इसके बाद सोनाक्षी को काफी ट्रोल भी किया गया था। होस्ट अमिताभ बच्चन भी इस बात से काफी हैरान हुए थे क्योंकि सोनाक्षी के बंगले का नाम रामायण है। उनके पिता का नाम शत्रुघ्न और भाइयों के नाम लव और कुश हैं। अब सोनाक्षी ने इंस्टाग्राम पर क्वेश्चन-आंसर सेशन शुरू किया। इस पर कई लोगों ने उनसे रामायण से जुड़े सवाल किए। सोनाक्षी ने एक फॉलोअर का सवाल शेयर किया। पूछा गया था कि संजीवनी बूटी कौन लाया था। इसके साथ सोनाक्षी ने इंस्टा स्टोरी पर लिखा, कई लोग मुझसे रामायण से जुड़े सवाल कर रहे हैं, कृपया दूरदर्शन पर देख लें उन्हें जवाब मिल जाएगा! जय बजरंग बली! बता दें कि ऐक्टर मुकेश खन्ना ने हाल ही में कहा था कि 'रामायण' और 'महाभारत' का शुरू होना ठीक है। इससे नई पीढ़ी और सोनाक्षी जैसे लोगों की जानकारी बढ़ेगी। इस पर सोनाक्षी के पिता शत्रुघ्न ने पलटवार किया था और कहा था उन्हें बच्चों पर प्राउड है।

एसएस राजामौली की फिल्म में होंगे महेश बाबू

फिल्म 'सरिलरु नीकेवरु' में शानदार प्रदर्शन के साथ साल 2020 को अपने नाम करने वाले सुपरस्टार महेश बाबू के अगले प्रोजेक्ट की घोषणा हो गई है। ऐक्टर का अगला प्रोजेक्ट बाहुबली और 'आरआरआर' के डायरेक्टर एसएस राजामौली के साथ होगा। पिछले कुछ महीनों से महेश बाबू और एसएस राजामौली के बीच संभावित सहयोग से जुड़ी बहुत सी खबरें सामने आ रही थीं, जिन पर अब पूर्ण विराम लग गया है। हाल ही में एक इंटरव्यू में एसएस राजामौली ने इस खबर की पुष्टि करते हुए कहा, यह कोई अफवाह नहीं है। तथ्य यह है कि मैं महेश बाबू को निर्देशित करूंगा और इसे केएल नारायण द्वारा निर्मित किया जाएगा। यह आरआरआर के बाद मेरी अगली फिल्म होगी। इस शीर्षकहीन फिल्म को अगले साल आधिकारिक रूप से घोषित किया जाएगा



और साल 2022 में इसकी शूटिंग शुरू की जाएगी। यह कहने की जरूरत नहीं है, यह निश्चित रूप से सभी के लिए एक यादगार लम्हा होगा, जब तेलुगू के सबसे बड़े ऐक्टर महेश बाबू और तेलुगू के सबसे बड़े डायरेक्टर एसएस राजामौली इस प्रोजेक्ट के लिए एक साथ आएंगे। महेश बाबू के प्रशंसक केवल दक्षिण तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि वह एक पैन इंडिया सुपरस्टार हैं और यही वजह है कि उनकी सभी फिल्मों बॉक्स ऑफिस पर धुआंधार कमाई करने में सफल रहती हैं।